457 वाँ सफलतम अंक

प्रतियोगिता दर्पण
हिन्दी मासिक

वर्ष 39 | द्वितीय अंक | सितम्बर 2016

इस अंक में...

10 मत भूलें कि जीवन अद्भुत अनुभव है....
12 राष्ट्रीय घटनाक्रम
23 अन्तर्राष्ट्रीय घटनाक्रम
31 आर्थिक वाणिज्यिक परिदृश्य
36 नवीनतम सामान्य ज्ञान
41 राज्य समाचार
42 खेलकूद
46 ओलम्पिक खेलों से सम्बन्धित महत्वपूर्ण तथ्य
49 रोजगार समाचार
51 विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी
54 युवा प्रतिभाएं
60 राजस्थान लोक सेवा आयोग : आर.ए.एस./आर.टी.एस. परीक्षा, 2016—अध्ययन रणनीति
63 स्मरणीय तथ्य
65 विश्व परिदृश्य
72 फोकस—सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों को संकट से उबारने की पहल और प्रयास
76 बैंकिंग लेख—इस्लामिक बैंकिंग की अवधारणा
79 पर्यावरणीय लेख (i) पारिस्थितिकी तंत्र : बदलते आयाम
81 (ii) जलवायु परिवर्तन से आसन्न संकट
83 शरणार्थी संकट—विश्व शरणार्थी संकट की वर्तमान स्थिति
87 द्विपक्षीय सम्बन्ध—भारत और सऊदी अरब के बीच एक नई पहल
91 सामाजिक लेख—नि:शक्तजन और मानवाधिकार
92 सामयिक लेख—(i) रोजगारयुक्त विकास की आवश्यकता
95 (ii) राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन
98 सांस्कृतिक लेख—भारत की विविध पारम्परिक नाट्य शैलियाँ
100 ऊर्जा लेख—ऊर्जा के वैकल्पिक स्रोत
103 चिकित्सा लेख—जीका वायरस एक वैश्विक स्वास्थ्य आपदा
105 कृषि लेख—(i) खाद्यान्न समस्या के निदान में जैविक खेती की भूमिका
111 (ii) अनिश्चितता के भंवर में गन्ना किसान
115 नारी-उत्थान-महिला सशक्तिकरण एक समाज-शास्त्रीय अध्ययन
117 उत्तर प्रदेश पुलिस उपनिरीक्षक परीक्षा हेतु विधि लेख—मूल विधि
120 सार संग्रह
124 वस्तुनिष्ठ सामान्य अध्ययन (i) आगामी सिविल सर्विसेज (प्रा.) परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न
137 (ii) मध्य प्रदेश पी.एस.सी. राज्य सेवा (प्रा.) परीक्षा, 2016
141 (iii) छत्तीसगढ़ श्रम-इंस्पेक्टर परीक्षा, 2015
146 उद्योग, व्यापार एवं बैंकिंग सचेतता
148 अंतरवैयक्तिक संचार—आगामी संघ एवं राज्य लोक सेवा आयोग प्रारम्भिक परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न
150 ऐच्छिक विषय—(i) जीव विज्ञान—उत्तर प्रदेश प्रवक्ता भर्ती परीक्षा, 2013
156 (ii) वाणिज्य—यू.जी.सी.-नेट/जे.आर.एफ. परीक्षा, 2015
161 (iii) राजनीति विज्ञान—यू.जी.सी.-नेट/जे.आर.एफ. परीक्षा, 2015
169 वार्षिक रिपोर्ट 2015-16—उपभोक्ता सुरक्षा, हितार्थ, समर्थन एवं प्रोत्साहन सम्बन्धी स्कीम्स तथा प्रोग्राम्स के बढ़ते चरण : विहंगावलोकन
172 तर्कशक्ति—(i) आई. बी.पी. एस. द्वारा आयोजित बैंक विशेषज्ञ अधिकारी (आई.टी.) परीक्षा, 2015
177 (ii) एल.आई.सी. सहायक प्रशासनिक अधिकारी (जनरलिस्ट) परीक्षा, 2016
180 संख्यात्मक योग्यता—आन्ध्रा बैंक पी.ओ. परीक्षा, 2015
186 क्या आप जानते हैं ?
187 अपना ज्ञान बढ़ाइए
188 प्रथम पुरस्कृत समीक्षा—मातृभाषा में शिक्षा बौद्धिक विकास का सर्वोत्तम स्वरूप है
190 प्रथम पुरस्कृत निबन्ध—चीन-पाकिस्तान गठबन्धन और भारत की सुरक्षा
192 निबन्ध प्रतियोगिता क्रमांक-446 का परिणाम
193 नवीनतम सामान्य ज्ञान
205 खेलकूद

प्रतियोगिता दर्पण में प्रकाशित किसी भी सामग्री अथवा चित्र के लिए सम्पादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है. -सम्पादक

• E-mail : publisher@pdgroup.in • Website : www.pdgroup.in

मत भूलें कि जीवन अद्भुत अनुभव है....

—साध्वी वैभवश्री 'आत्मा'

जीवन कोई समस्या नहीं है जिसका समाधान खोजा जाए, जीवन तो एक वास्तविकता है जो अनुभव की जानी चाहिए.

यह जीवन सर्वोपरि है. जीवन से श्रेष्ठ कुछ भी नहीं है, अगर हमारा जीवन है, तो शेष सारे साधन हैं, जीवन ही नहीं तो इन वस्तुओं का क्या मूल्य ? जीवन अपने आप में अद्भुत है. अद्भुत इसलिए कि वह हमारी सोच के दायरों में समा सकें, ऐसा कभी भी नहीं है. इसकी गति स्वतः चालित है. जैसे—श्वासों का चलना, धड़कन की गूँज, रक्त प्रवाह, भूख-प्यास, नींद-जागरण, आहार-निहार—ये सब ऐसे प्राकृत क्रम हैं, जिन्हें इंसान द्वारा न तो कभी बाँधा जा सकता है, न ही चालू किया जा सकता है. जीवन का देह में प्रवाहित होना ही अपने आप में अद्भुत है. इस जीवन धारा के संगीत को, इसकी लयबद्धता को अगर हम महसूस कर सकें, तो वाकई हम सभी को हैरानी होगी और हम सभी यही कह उठेंगे कि 'जीवन अद्भुत अनुभव है'.

समण भगवान महावीर की वाणी का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण, सरल किन्तु गहन अर्थों को समेटे हुए एक संक्षिप्त सूत्र यही है कि—

'अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेह ।'

अर्थात् हे देवानुप्रिय ! अद्भुत है सुख (अहा सुहं) ! बस प्रतिबन्ध मत करना.

वे कहते हैं कि हमारा सम्पूर्ण जीवन अद्भुत अहसासों से भरा है, हर पल सुखपूर्ण है, बस हम प्रतिबन्ध न करे. कहीं कोई जुड़ाव, बंधन न बाँधे. जीवन सरिता को मन की इच्छाओं के अनुरूप बाँधने की चेष्टा ही जीवन को दुःखमय बना देती है, जब एक विद्यार्थी सोचता है कि इस वर्ष तो 99% अंकों को पाकर ही रहूँगा, चाहे इसके लिए मुझे कुछ भी करना पड़े, जब एक व्यापारी सोच बना लेता है कि इस वर्ष 25 करोड़ कमाने ही कमाने है, चाहे कुछ भी हो जाए, इस प्रकार जब कोई इंसान अपनी इच्छाओं के अनुरूप जीवन के विविध दृश्यों को बाँधने की चेष्टा करता है, तब वह प्रतिबन्ध कर रहा होता है और यही प्रतिबन्ध उसके जीवन को दुःखमय प्रतीत कराने लग जाता है. यहाँ 'प्रतिबन्ध' का अर्थ हुआ अपनी शर्तों के अनुरूप जीवन को चाहना.

जो लोग जीवन को अपनी शर्तों में जीना पसन्द करते हैं, देखिएगा..... बस वे लोग ही परेशान नजर आएंगे अन्यथा जीवन का होना ही इतना अद्भुत है कि इसके मूल्य पर कोई और शर्त, आकांक्षा अथवा इच्छा रखी ही नहीं जा सकती है. यह है तो सब कुछ है. अगर किसी विद्यार्थी की चाहत के अनुरूप उसके प्राप्तांक (Result) नहीं रहे, तब भी उसे नाराज, कुपित नहीं होना है, बल्कि यही सोचना कि मैं अपना 100% प्रयास देता हूँ. शेष जीवन को जो मंजूर है, वह हो..... ऐसा सोचने मात्र से वह विधेयात्मक (Positive) हो जाएगा और उसका विधेयात्मक होना ही जीवन प्रवाह के साथ लयबद्ध होना है और तब उसकी लयबद्धता उसे उन शिखरों तक स्वयमेव ले जाएगी, जहाँ जाना उसके लिए स्वाभाविक ही था. स्वाभाविक ही था का अर्थ है कि जैसे नदी का सागर में मिलना स्वाभाविक है, फूलों का खिलना, फलों का पकना, मेघों का बरसना—यह सब कुछ स्वाभाविक है. ठीक इसी तरह हम जो होने को हैं, वो स्वतः होंगे ही, बस हम अपनी शर्तों व परतों को बीच में न लाएं. जीवन जो दे, उसको यथावत् (As it is) स्वीकार करते हुए आगे बढ़ते जाएं. 'आगे बढ़ते जाना' महत्त्वपूर्ण है. जीवन के अद्भुत होने का अहसास बस, उसी को हो सकता है, जो पुरानी बातों, यादों व अनुभवों की पकड़ बनाए नहीं बैठा है.

●●●